P: ISSN NO.: 2394-0344 RNI No.UPBIL/2016/67980 VOL-3* ISSUE-7* (Part-1) October- 2018
E: ISSN NO.: 2455-0817 *Remarking An Analisation*

जयपुर घराने का सूरज पंडित गिरधारी महाराज

सारांश

जयपुर घराने का नाम संगीत की गायन, वादन व नृत्य तीनों ही विधाओं में अपना अहम स्थान रखता है। जयपुर घराने के आकाश के दामन में ऐसे अनेक सितारे हैं जिन्होंने अपनी चमक से देश विदेश को रोशन किया है। ऐसी ही एक चमकती हुई हस्ती है पं. गिरधारी महाराज। महाराज जी ने जयपुर घराने के कथक को केवल भारत ही नहीं अपितु देश विदेश में पहचान दिलाई है यदि ये कहा जाए कि इन्होंने जयपुर के कथक घराने को एक सूरज की भाँति कथक जगत में उजागर किया है तो कोई अतिश्योक्ति नहीं होगी।

मुख्य शब्द : जयपुर घराना, गिरधारी महाराज, कथक का नवाचार

सुरभि शर्मा
शोध छात्रा,
संगीत विभाग,
राजस्थान विश्वविद्यालय
जयपुर, राजस्थान

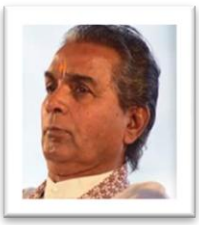

पं0 गिरधारी महाराज
कथक–नृत्याचार्य

प्रस्तावना

जयपुर घराना गायन, वादन व नृत्य में निरंतर पीढ़ी दर पीढ़ी कलाकारों को मंच प्रदान करते हुए संगीत के समृद्ध घरानों में गिना जाता है। जयपुर घराने से जहाँ गायन में किशोरी अमोनकर, मल्लिकार्जुन मंसूर, केसरभाई केरकर, श्रुति सदोलीकर, पद्म तलवलकर, अश्विनी भिडे आदि गायक निकले हैं। वहीं कत्थक में भी जयपुर घराने का अपना अहम स्थान है।

अध्ययन का उद्देश्य

नृत्यों के घरानों में जयपुर घराना मेरे चित्त को बहुत प्रिय है क्योंकि जयपुर घराने के नृत्य कलाकार अपनी एक अलग ही छाप छोड़ते हैं।

शोधार्थी ने अपनी गायन विधा के साथ ही कथक नृत्य के साथ भी गायन प्रस्तुत किया है इसी दौरान इनकी मुलाकात पं. गिरधारी महाराज से हुई तथा शोधार्थी इनसे व इनके नृत्य से इतनी प्रभावित हुई की इनको अपने शोध पत्र का विषय बनाना चाहा। कुल मिलाकर कथक नृत्य के क्षेत्र में ऐसे बहुमुखी कलाकार दुर्लभ रहे हैं, जो गायक वादक, नर्तक श्रेष्ठ गुरू एवं श्रेष्ठ रचनाकार रहे हो। पंडित जी ने अब तक जो सम्मानीय कार्य किया है उसे फलक तक पहुँचाना व उनके नूतन, मौलिक व पारम्परिक कार्य को उजागर करना ही शोधार्थी का लक्ष्य है।

इस उद्देश्य से शोधार्थी अपने शोध पत्र का विषय उनके उद्घाटित एवं अनुदघाटित पक्षों के शोधपरक अध्ययन को बनाया है। ऐसे महान् कलाकार के महान् कार्यों पर उनके कला की ऊंचाईयों के कद के अनुरूप प्रकाशन कार्य नहीं हुआ है। जिसे संगीत जगत के समक्ष लाना ही शोधार्थी के शोध पत्र का मुख्य उद्देश्य होगा। शोधार्थी की जिम्मेदारी होगी कि उनकी महान साधना के महत्व एवं योगदान के सिद्ध कर सकूँ जो कि संगीत जगत के लिए एक विशेष योगदान होने के साथ राजस्थान जयपुर की संगीत विरासत के संरक्षण एवं संवर्धन में भी एक पुष्प अर्पित होगा।

जयपुर घराना और कत्थक

हिन्दुस्तानी संगीत के प्रसिद्ध घरानों में से एक है ''जयपुर घराना'' इसे अल्लादिया खान घराना नाम से भी जाना जाता है। उस्ताद अल्लादिया खान इस घराने के संस्थापक कहे जाते हैं।

जयपुर घराने की शुरूआत करने वालों में भानु जी का नाम भी आता है, जिन्हें किसी संत द्वारा ताण्डव नृत्य की शिक्षा प्राप्त हुई। इनके बेटे मालु जी थे, जिन्होंने अपने दोनों बेटों लालू जी और कान्हू जी को दी, कान्हू जी ने वृंदावन जाकर नटवरी नृत्य की शिक्षा भी प्राप्त की इनके दो लड़के थे– गीधा जी और शेजा जी, पहले ने ताण्डव व दूसरे ने लास्य अंग में विशेष योग्यता प्राप्त की।

जयपुर घराने से तात्पर्य कत्थक नृत्य की राजस्थानी परम्परा से है। इसके नर्तक ज्यादातार हिन्दु राजाओं के दरबारों से संबद्ध रखते थे। अतः जहाँ एक ओर कथक नृत्य की बहुत सी प्राचीन परम्पराये इस घराने में अब भी सुरक्षित है, वहीं अपने आश्रयदाताओं की रूचि के अनुसार इनके नृत्य में जोश व

तेजी तैयारी अधिक दिखाई पड़ती है। पखावज की मुश्किल तालों जैसे– धमार, चोताल, रूद्र, अष्टमंगल, ब्रह्मा, लक्ष्मी, गणेश आदि ये अत्यंत सरलता से नाच लेते हैं। इनके द्वारा ततकार में कठिन लयकारियों का प्रदर्शन बहुत प्रसिद्ध है। जितना पैरों की सफाई पर इसमें ध्यान दिया जाता है। उतना हस्तकों पर नहीं, नृत्य के बोलो के अलावा, कवित्त प्रिमलू, पक्षीपरन, जाती परन, आदि के विभिन्न प्रकार के बोलों का प्रयोग इस घराने की विशेषता है। भाव प्रदर्शन में सात्विकता रहती है और ठुमरी की अपेक्षा भजन पदों पर भाव दिखाये जाते हैं।

कथक की जन्मस्थली राजस्थान की इस धरा से जुड़े कथक के तीर्थ जयपुर घराने में नृत्य के दौरान पाँव की तैयारी, अंग संचालन व नृत्य की गति पर विशेष ध्यान दिया जाता है। इसीलिये सशक्त नृत्य के नाम पर जयपुर घराना शीर्ष स्थान कायम किए हुए हैं। नृत्याचार्य पंडित गिरधारी महाराज, शशी सांख्ला, राजकुमार जबड़ा, राजेन्द्र गंजानी आदि के अथक प्रयासों के दम पर यह घराना अपनी पूर्व छवि कायम किए हुए हैं।

जयपुर घराने को शीर्ष स्थान पर पहुँचाने में ''पद्मश्री'' से सम्मानित उमा शर्मा, प्रेरणा श्रीमाली, ''पद्मश्री'' शोभना नारायण, जगदीश गंगानी जी के योगदान को नजरअंदाज नहीं किया जा सकता है। इन कलाकारों ने विदेशों में भी भारतीय शास्त्रीय नृत्य की जो अमिट छाप छोड़ी है वह अविस्मरणीय है।

पंडित गिरधारी महाराज – परिचय

पंडित गिरधारी महाराज का जन्म 25 मार्च सन् 1942 को जयपुर के एक कथक परिवार में हुआ। आपके पिताजी का नाम स्व. श्री लक्ष्मी नारायण है। महाराज जी सुप्रसिद्ध कथक के मूर्धन्य कलाकार हैं। आपको संगीत की तीनों कलाओं गायन, वादन व नृत्य में महारत आसिल है। आप कथक नृत्य के अलावा लोकनृत्य में भी रूचि रखते हैं।

वंश परम्परा

आपके पूर्वज ईसरा जी व केसरा जी हुए। जिनके पितामह ईसरा जी के कोई संतान नहीं हुई। केसरा जी के सात पुत्र थे। जिनके नाम क्रमशः छाजूमल जी, नानू जी, कान जी, भैरू जी, भागचन्द जी, बालाबक्श जी, मोहन लाल जी है। बाबूलाल जी गुणीजन खाने में अच्छे तबला वादक के रूप में कार्यरत थे। इनके दो पुत्र कन्हैया लाल जी व लक्ष्मी नारायण जी। इन दोनों भाईयों ने तबला व पखावज के साथ–साथ नृत्य की शिक्षा ली। ये दोनों भ्राता भी जयपुर गुणीजन खाने में कार्यरत रहे। श्री कन्हैयालाल जी के विषय में कहा जाता है कि वे भाव करते समय किसी किसी एक मुद्रा को दोहराते नहीं थे। एक बोल पर रात–रात भर भाव प्रकट करने में उन्हें महारत हासिल थी। उनकी एक और खास विशेषता थी कि ये श्रृंगारिक ठुमरियों के साथ–साथ पुरूषों द्वारा की जाने वाली ठुमरियों पर भावाभिनय किया करते थे। दूसरे भ्राता श्री लक्ष्मी नारायण जी तो चहुँमुखी कलाकार थे। उन्हें गायन, वादन व नृत्य तीनों विधाओं में महारत हासिल थी। आपके दो पुत्र हुए गिरधारी जी व शिव किशोर जी। गिरधारी जी स्वयं भी चहुँमुखी प्रतिभा के धनी हैं।

गिरधारी महाराज जी के 3 पुत्र व 1 पुत्री कमलकान्त, कौशल कान्त, स्व. केशव कान्त व श्रीमती वन्दना जी। तीनों ही सन्तानों की गायन, वादन व नृत्य की शिक्षा आपकी देखरेख में ही हो रही है। आपके बड़े पुत्र कमल कान्त वर्तमान में फ्रांस में कथक नृत्य का सफल प्रदर्शन कर रहे हैं।

गिरधारी महाराज की शिक्षा

पं. गिरधारी महाराज ने संगीत नृत्य की शिक्षा अपने पिता पं. लक्ष्मीनारायण जी ताऊ पं. कन्हैया लाल जी, पं. जुगल किशोर जी से प्राप्त की। पिता पं. लक्ष्मीनारायण जी स्वयं एक कुशल नर्तक व तबला वादक थे। पं. लक्ष्मीनारायण जी सेवानिवृत होने तक राजस्थान संगीत संस्थान, जयपुर में कार्यरत रहे। तबला आपने अपने पिता श्री लक्ष्मीनारायण जी से सीखा। नृत्य की शिक्षा के दौरान ही गिरधारी महाराज ने गायन सीखा और गायन में आपने गुरू उस्ताद करीम हुसैन खाँ, मन्नू जी भट्ट एवं पं. ब्रह्मानन्द गोस्वामी रहे। पंडित जी ने बताया कि ''मैं घरानेदार हूँ। मेरे पूर्वज भी यही करते थे तो यही मुझे भी करना है। मुझे बचपन से ही कथक नृत्य करने में रूचि थी पर जब मैं नृत्य करता था तब मेरे साथी दोस्त मुझे बहुत चिढ़ाते थे। क्योंकि वो सब तो खेलने में लगे रहते थे और मैं घूँघरू बाँध कर रियाज किया करता था। वैसे मुझे नृत्य सीखने में कोई परेशानी नहीं आई पर जब मैं घर से रियाज करने के लिए कक्षा में जाया करता था। तब रास्ते में घुँघरू ले जाने में मुझे शर्म आती थी। रास्ते में घुँघरू की आवाज सुनकर सब मुझे देखने लगते थे कि देखो लड़का घुँघरू लेकर जा रहा है। लेकिन मुझे कथक से बहुत लगाव था जिसके कारण मैं उनकी किसी बात पर ध्यान नहीं देता था।''

नृत्य गुरू के रूप में कार्यानुभव

नृत्यगुरू के रूप में आपने 16 वर्ष राजस्थान संगीत संस्थान, जयपुर में कथक नृत्य की उच्च कक्षाओं को प्रशिक्षण प्रदान करने के साथ ही 3 वर्ष तक जयपुर कथक केन्द्र में भी विद्यार्थियों को तेयार किया देश–विदेश के अनेक आमन्त्रणों को अस्वीकार करते हुए अपनी जन्मभूमि जयपुर में रहकर नृत्य की सेवा व प्रचार प्रसार को अपना परम उद्देश्य समझा महारानी कॉलेज में नृत्य तालीम देने के बाद अपने ही नटराज संस्थान में बच्चों को कथक की बारीकियों से आत्मसात करवा रहे हैं। इसके अतिरिक्त अपने गुरू पिता के नाम से संचालित संस्था 'लक्ष्मीनारायण नृत्याश्रम' में कथक नृत्य का प्रशिक्षण दे रहे हैं। इसके अलावा अनेक शिष्य आपसे गुरू शिष्य परम्परा के अंतर्गत शिक्षा प्राप्त कर रहे हैं।

कथक नृत्य के अलावा शैलियाँ

आपने केवल शास्त्रीय ही नहीं बल्कि लोक नृत्य के कार्यक्रम भी दिये हैं। आपने लोक नृत्यों की भी कोरियोग्राफी की आपने अपना जीवन नृत्य को ही समर्पित कर दिया आपके निर्देशन में सम्पूर्ण रामायण, गीत गोविन्द, गति विरोध, रितुदर्पण, दमयन्ती स्वयंवर, उर्वशी तथा चाण्डालिका आदि नृत्य नाटिका भी मंचित हो चुकी है। आपने अनेक नृत्य नाटिकाओं का सफल निर्देशन किया है और कथक नृत्य में लोक नृत्यों का मिश्रण करके नृत्य को एक नया रूप देने का सफल प्रयास किया है।

इसके अतिरिक्त अनेकों फिल्मों में नृत्य का निर्देशन भी महाराज जी के द्वारा किया गया है। नेपाल की 'लिटिल बुद्धा' तथा अमेरिका की 'द पवेलियन' फिल्मों में रियासत काल में होने वाले शास्त्रीय संगीत का बहुत सुन्दर प्रयोग किया था। इन फिल्मों में आपने अपने शिष्यों को अवसर प्रदान किया था। जिसमें शिष्या प्रसिद्ध कथक नृत्यांगना प्रेरणा श्रीमाली ने नृत्य किया था।

गिरधारी महाराज जी की रचनाशीलता

पं. गिरधारी जी ने कथक नृत्य की अनेक बंदिशों का निर्माण किया। आपका कहना है कि प्राचीन काल में नृत्यकार को तबले व पखावज का ज्ञान था जिसके कारण कथक नृत्य की बन्दिशों में तबले व पखावज के बोल होते हैं तथा क्लिष्ठ लयकारियाँ भी होती है। आपकी बन्दिशों में आमतौर पर चक्करदार तीन पल्लों का होता है आपने चार पल्लों का चक्करदार, पाँच पल्लों का चक्करदार जैसी– नवीन बन्दिशों का निर्माण किया। आपकी बन्दिशों में कथक के बोलों के साथ–साथ तबला व पखावज के बोलों का मिश्रण बहुत सुन्दर लगता है तथा आपने अनेक नई बन्दिशें जैसे– दोहरा जिस बन्दिशों में हर बोल दो–दो बार है। अनेक फरमाईशी बन्दिशे कमाली जैसी अनेक बन्दिशे बनाई है। इन्हें क्लिष्ठ लयकारियों में बाँधा है। आपने अनेक कविताओं का निर्माण किया है। जिसमें धातिट धातिट धाधा किडधा तिट धागेतिट इन्हीं बोलों को विस्तार पूर्वक बढ़ाया है।

महाराज जी की शिष्य परम्परा

गुरू शिष्य परम्परा में रहते हुए आपने अनेक शिष्यों को कथक व तबले की शिक्षा दी। आप राजस्थान को एक श्रेष्ठ गुरू के रूप में है, आपने ऐसे शिष्य तैयार किये है जो देश विदेशों में नाम कर रहे हैं तथा गुरू शिष्य परम्परा में अनेक शिष्यों को गंडा बंध शार्गिद भी बनाया।

आपके शिष्यों में प्रेरणा श्रीमाली, मधु बडजात्या, रेखा त्रिपाठी, ज्योति भारती गोस्वामी, कविता सक्सैना, कमलकान्त, कौशलकान्त, केशवकान्त, लक्ष्मण शर्मा, अजय राठौड़, हरिदत्त कल्ला, रूपसिंह शेखावत, दिलीप पँवार, प्रेरणा खाण्डेकर, स्वाति गर्ग, श्वेता गर्ग, नमिता जैन, वेणु जैन, कनिका पाण्डे, शशि शर्मा (फिल्मी अदाकारा), बीना सरीन (अमेरिका), ऐमनु एल (फ्रांस), अंकित पारीक, अश्विनी बाने, रश्मि जाँगिड, तरूणा जाँगिड, मनीषा गुलयानी आदि है।

आपके इन शिष्यों में प्रेरणा श्रीमाली राष्ट्रीय – अन्तर्राष्ट्रीय स्तर की कथक नृत्यांगना है। ज्योति भारती गोस्वामी वर्तमान में राजस्थान संगीत संस्थान में नृत्य गुरू पद पर आसीन है व अनेक शिष्य तैयार कर रही है। ज्योति भारती गोस्वामी, कविता सक्सैना व वेणु जैन आदि को सुर सिंगार परिषद द्वारा 'श्रृंगार मणि' की उपाधि से विभूषित किया गया।

प्रेरणा खाण्डेकर ने अखिल भारतीय नृत्य प्रतियोगिता कटनी में प्रथम स्थान तथा सर्वश्रेष्ठ नृत्यांगना के लिए स्वर्ण ताज व 'नृत्य श्री' का पुरस्कार प्राप्त किया। श्वेता गर्ग, स्वाति गर्ग, नमिता जैन, अजय राठौड़, अंकित पारीक व प्रेरणा खाण्डेकर आदि ने राजस्थान संगीत नाटक अकादमी व मानव संस्थान विकास मंत्रालय सांस्कृतिक विभाग, नई दिल्ली से छात्रवृति प्राप्त की है। आपके ये सब शिष्य भी अब अपने शिष्य तैयार कर रहे हैं। जैसे– ज्योति भारती गोस्वामी व कविता सक्सैना जी राजस्थान संगीत संस्थान में नृत्य गुरू के रूप में कार्यरत है तथा आपके अनेक शिष्य इसी प्रकार कई विद्यालयों, महाविद्यालयों व अनेक संगीत शिक्षण संस्थानों में नृत्य गुरू के रूप में जयपुर घराने के कथक की खुशबू बिखेर रहे हैं।

महाराज जी की प्रस्तुतियाँ

पंडित गिरधारी महाराज जी का जीवन नृत्य को समर्पित था वे रियाज को ही ईश्वर की आराधना मानते हैं।

1. सन् 1988 व 1992 में आयोजित जापान महोत्सव में भाग लिया।
2. 1992 में जापान में 'अन्तर्राष्ट्रीय नृत्य समारोह में अपनी कला का प्रदर्शन किया।
3. 1993 में फ्रांस में आयोजित 'कथक दर्शन' कार्यक्रम में अपनी शिष्य मण्डली के साथ भाग लिया।
4. ''इन्टरनेशनल डाँस फेस्टीवल'' में अपने कला के फन से दर्शकों को रोमांचित किया।
5. 11 जनवरी 2003 को कला समीक्षक श्री गोपाल पुरोहित एवं संगीतज्ञ पं. गोकुलचन्द राव की स्मृति में सबरंग संस्था और पिंकसिटी प्रेस क्लब की ओर से आयोजित समारोह में अपनी कला का प्रदर्शन किया है। उसमें विभिन्न विधाओं और कला की बारीकियों का समावेश कर कथक प्रस्तुत किया।

इस कार्यक्रम में घूंघट के प्रकारों का भी बारीकी से अहसास कराया। नृत्य के जरिए हिन्दू मुस्लिम भेद भुलाने का भी प्रयास किया तथा अपने नृत्य का सफलतापूर्वक प्रदर्शन किया।

महाराज जी की उपलब्धियाँ

आपको अनेक सम्मान व अवार्डों से नवाजा गया है।

1. 1988 में राजस्थान दिवस समारोह पर मिनिस्टर ऑफ इन्टरनेशनल एण्ड मीडिया, इण्डिया गर्वमेन्ट की ओर से 'राजस्थान श्री' की उपाधि से सम्मानित किया गया।
2. जयपुर समारोह पर राजस्थान पत्रिका द्वारा 'जयपुर मणि' की उपाधि से 'राजस्थान श्री' की उपाधि से नवाजा गया।
3. 1997 में 'शास्त्रीय कला मण्डल' की ओर से जयपुर कथक केन्द्र के स्थापना दिवस पर नृत्य सम्राट की उपाधि से अलंकृत किया गया।
4. सूचना एवं प्रसारण मंत्री की ओर से अभिनन्दन पत्र दिया गया।
5. जवाहर कला केन्द्र में आयोजित भारत की स्वर्ण जयन्ति के अवसर पर राजस्थान के महामहिम राज्यपाल जी द्वारा सम्मानित हुए।
6. 1998 में 'वन्दे मातरम' के नृत्य निर्देशन के लिए राजस्थान के राज्यपाल से भी सम्मानित हुए।
7. 2001 में राजघराने द्वारा आयोजित सम्मान समारोह में जयपुर नरेश महाराजा भवानी सिंह जी द्वारा 'कलारत्नाकर' सम्मान से सम्मानित किया गया।

8. महाराज ईश्वरी सिंह पुरस्कार प्राप्त हुआ।
9. 2002 में भारत सरकार द्वारा संगीत नाटक अकादमी अवार्ड दिया गया।
10. 2005 में लोक नायक जयप्रकाश नारायण अवार्ड भी प्राप्त हुआ।

निष्कर्ष

मेरे शोध पत्र का यही निष्कर्ष निकलता है कि पंडित गिरधारी महाराज जी ने अपनी जन्मभूमि जयपुर में रहकर जयपुर घराने के कथक पर सम्पूर्ण जीवन कार्य किया व कर रहे हैं।

महाराज जी के द्वारा कथक में अनेक नवीन प्रयोग किए गए उसी के फलस्वरूप आज की युवा पीढ़ी कथक नृत्य की तरफ आकर्षित हो रही है व जयपुर के 90 प्रतिशत शिष्य आप ही के है जो विद्यालयों व महाविद्यालयों में नृत्य गुरू के रूप में कार्यरत है व विभिन्न मंचों पर अपनी प्रस्तुतियाँ दे रहे हैं।

संदर्भ ग्रंथ सूची

1. *ऐतिहासिक परिपेक्ष में कथक नृत्य तो माया टांक कनिष्क पब्लिशर्स डिस्ट्रीब्यूटर्स नई दिल्ली, 2006*
2. *कथक नृत्य – श्री लक्ष्मीनारायण गर्ग, संगीत कार्यालय, हाथरस, 1960*
3. *भारत में शास्त्रीय नृत्य – छाया भटनागर यंगमैन एंड कम्पनी, दिल्ली, 1981*
4. *कथक श्रृंगार – पं. तीर्थराम आजाद, नटेश्वर कला संस्थान, दिल्ली, 1986*
5. *कथक प्रसंग विशेषज्ञो द्वारा विचार एवं विश्लेषण – डॉ. रश्मि वाजपेयी वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली, प्रथम संस्करण, 1992*
6. *भारतीय नृत्य कला एवं परिचय – श्री केशव चन्द वर्मा, किताब महल, इलाहाबाद, 1961*
7. *पं. गिरधारी महाराज जी से साक्षात्कार द्वारा प्राप्त जानकारी – 15 जून 2015*
8. *कौशल कान्त जी (महाराज जी के पुत्र) से साक्षात्कार द्वारा प्राप्त जानकारी, 26 फरवरी 2018*
9. *पं. राजेन्द्र राव जी से साक्षात्कार द्वारा प्राप्त जानकारी 22 सितम्बर 2018*